संकलित परीक्षा - I (2015)

कक्षा -X **हिन्दी 'अ'** **निर्धारित समय : 3 घण्टे** **अधिकतम अंक : 90**

निर्देश : (1) इस प्रश्न-पत्र के **चार खंड** हैं - **क, ख, ग** और **घ।**

(2) चारों खंडों के प्रश्नों के उत्तर देना **अनिवार्य** है।

(3) यथासंभव प्रत्येक खंड के उत्तर क्रमशः दीजिए।

खण्ड-क

(अपठित बोध)

1 **निम्नलिखित गद्यांश को पढ़िए तथा दिए गए प्रश्नों के उत्तर सही विकल्प चुनकर लिखिए—** 5

''मेरा विश्वास है कि प्रत्येक आदमी के मन में एक घट होता है जिसमें अमृत भरा है। पहले उस घट का मुँह खुला हुआ था जिसमें से अमृत बराबर प्रवाहित होता था। आदमी सुखी था, समाज सुखी था। किंतु आज की हमारी सत्तात्मक राजनीति ने उस घट पर दो ढक्कन लगा दिए। एक सत्ता का, दूसरा अर्थ का। नतीजा यह हुआ कि उस घट का मुँह बंद हो गया और अमृत का प्रवाह अवरुद्ध हो गया। ये सारी विकृतियाँ इसी कारण उत्पन्न हुई हैं। इस संदर्भ में मेरी एक घटना को सुनकर आप समझ जाएँगे। मैं हिमालय पर पैदल बहुत घूमा हूँ। घूमते-घूमते जब गंगोत्री से गोमुख गया तो अचानक मुझे यह विचार आया कि गंगा का जल इतना पवित्र क्यों है ? दूसरे पल ही उसका उत्तर मिला क्योंकि इसका उद्गम पवित्र है। इसी प्रकार आदमी की जो कर्मधाराएँ हैं वे विचार-धाराओं से निकलती हैं। यदि आदमी के विचार विकृत होते हैं तो उसकी समस्त कर्मधाराएँ भी विकृत होंगी।

(i) व्यक्ति की कर्मधाराओं का उद्गम होता है, उसकी —

(क) क्रियाशीलताएँ (ख) विचारधाराएँ

(ग) जीवन-प्रक्रियाएँ (घ) वार्तालाप की धाराएँ

(ii) लेखक के अनुसार गंगा का जल पवित्र होने का कारण यह है कि, —

(क) उसमें जड़ी-बूटियों का रस मिला है। (ख) वह झरनों से निकलता है।

(ग) गंगा का उद्गम पवित्र है। (घ) उसका बहाव तेज़ है।

(iii) आदमी के मन के घट में भरा होता है, —

(क) जल (ख) गंगाजल (ग) अमृत (घ) क्षीर

(iv) पहले मानव सुखी था क्योंकि —

(क) उसके मन का घड़ा खुला रहता था। (ख) उसकी आवश्यकताएँ कम थीं।

(ग) उसे दुखों से सामना नहीं करना पड़ता था। (घ) उसे कोई चिन्ता न थी।

(v) 'अवरुद्ध' का अर्थ है —

(क) रोकना (ख) रुकावट (ग) रुका हुआ (घ) रोक

2 **निम्नलिखित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़िए और दिए गए प्रश्नों के उत्तर सही विकल्प चुनकर लिखिए—** 5

यह विडम्बना है कि मनुष्य अपनी प्रिय चीज़ त्याग सकता है, परन्तु मान त्यागना उसके लिए कठिनतम कर्म है। वह धन-सम्पत्ति, पत्नी-पुत्र सबको छोड़ सकता है, लेकिन दुनिया को अलविदा कहने तक उसे अपने मान का ख्याल बना रहता है। यही कारण है कि वह बंधनमुक्त नहीं हो पाता। मकड़ी की तरह अपने ही बुने हुए जाल में जीवनपर्यन्त फँसा रहता है। अपने वास्तविक स्वरूप की पहचान एवं कर्त्तव्यबोध नहीं होने से वह आत्म-प्रचार जैसे कुत्सित कार्य में अपना जीवन व्यर्थ बर्बाद कर देता है। अगर, उसे जीवन की सार्थकता का बोध हो, तो वह आत्म-प्रचार से दूर रहकर सदैव आत्म-विस्तार के लिए प्रयत्नशील रहेगा।

(i) व्यक्ति आत्म-प्रचार से तभी दूर रह सकता है जब वह, —

(क) सार्थक जीवन जी रहा हो। (ख) दूसरों का प्रचार करता हो।

(ग) जीवन की सार्थकता समझने के लिए आत्म-निरीक्षण करे। (घ)कर्त्तव्य-बोध के लिए प्रयत्न करे।

(ii) मनुष्य जीते जी छोड़ नहीं पाता अपना, —

(क) धन (ख) घर (ग) परिवार (घ) मान और अहंकार

(iii) ''अपने ही बुने हुए जाल में फँसे रहने'' का आशय है —

(क) घेरों में कैद रहना। (ख) स्वयं के द्वारा बनाई हुई वस्तुओं को चाहना।

(ग) स्वनिर्मित बंधन से मुक्त न होना। (घ) अपने-पराए का विचार बनाए रखना।

(iv) व्यक्ति के द्वारा आत्म-प्रचार के कार्य को माना गया है —

(क) कुत्सित और बुरा कार्य (ख) परोपकार का कार्य

(ग) अच्छा कार्य (घ) महत्त्वपूर्ण और विशिष्ट कार्य

(v) 'आत्मविस्तार' में समास है —

(क) तत्पुरुष (ख) कर्मधारय (ग) द्विगु (घ) द्वंद्व

3 **निम्नलिखित पद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़िए तथा दिए गए प्रश्नों के सही उत्तर वाले विकल्प चुनकर लिखिए।** 5

कल-कल करते उद्योगों में,
कल का काम आज निबटाएं।
होड़ लगाकर उत्पादन की,
उत्पादन दिन-रात बढ़ाएं।।
सर्व-शक्ति सम्पन्न राष्ट्र हो, ऐसा इसका चित्र बनाएं।
आगे बढ़ता देश हमारा, आओ इसे महान बनाएं।।
अनुशासन में रहें सभी जन
यही स्वतंत्रता सिखलाती है।
राष्ट्र- हितों पर मर मिट जाना
देश-भक्ति कहलाती है।
दृढ़ता से अपने भारत को, कर्मनिष्ठ बलवान बनाएं।
आगे बढ़ता देश हमारा, आओ इसे महान बनाएं।
ऊँचे-ऊँचे लक्ष्य हमारे, उन पर अपने कदम बढ़ाएँ।
आगे बढ़ें, करें उन्नति नित, नितनवजन-जीवन सरसाएँ।

(i) कवि को उद्योग प्रतिष्ठानों से अपेक्षा है कि उनमें,-

(क) मानक वस्तुएँ निर्मित हों।

(ख) उनमें सस्ती और उपयोगी वस्तुएँ बनें

(ग) कल का काम आज ही पूरा किया जाए

(घ) श्रमिकों का हित साधा जाए

(ii) स्वतंत्रता का अर्थ है,-

(क) निष्ठापूर्वक कार्य करना (ख) पढ़-लिखकर दक्ष हो जाना

(ग) परस्पर सहयोग करना (घ) अनुशासित होकर जीवन जीना

(iii) जन-जीवन की सरसता आधारित है,-

(क) ऊँचे-ऊँचे लक्ष्यों पर (ख) राष्ट्र-हित के कार्यों पर

(ग) सर्व-शिक्षा पर (घ) सर्व-सामान्य के हितों पर

(iv) कविता में भारत के विषय में यह कामना की गई है कि वह,-

(क) स्वाभिमानी बने (ख) कर्त्तव्यनिष्ठ और बलवान बने

(ग) दीनता ग्रहण न करे (घ) काम करने में पीछे न रहे

(v) ''कल-कल करते उद्योगों में, कल का काम आज निबटाएँ'' में निहित अलंकार है -

(क) रूपक (ख) यमक

(ग) उपमा (घ) उत्प्रेक्षा

4 **निम्नलिखित पद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़िए तथा दिए गए प्रश्नों के सही उत्तर वाले विकल्प चुनकर लिखिए।** 5

कुछ भी-बन, बस कायर मत बन?
ठोकर मार, पटक मत माथा,
तेरी राह रोकते पाहन!
कुछ भी बन, बस कायर मत बन।
ले-दे कर जीना, क्या जीना ?
कब तक गम के आँसू पीना ?
मानवता ने सींचा तुझको
बहा युगों तक खून-पसीना ?
कुछ न करेगा ? किया करेगा-
रे मनुष्य-बस कातर क्रंदन ?
कुछ भी बन, बस कायर मत बन।
'युद्धं देहि' कहे जब पामर,
दे न दुहाई पीठ फेर कर!
या तो जीत प्रीति के बल पर,
या तेरा पथ चूमे तस्कर!
प्रति हिंसा भी दुर्बलता है,
पर कायरता अधिक अपावन।
कुछ भी-बन, बस कायर मत बन।
तेरी रक्षा का न मोल है
पर तेरा मानव अमोल है।
यह मिटता है, वह बनता है,
यही सत्य की सही तोल है।
अर्पण कर सर्वस्व मनुज को
कर न दुष्ट को आत्म-समर्पण।
कुछ भी बन, बस कायर मत बन।

(i) कविता में निहित संदेश है,-

(क) वीरता दिखाने का (ख) दुष्टों के दमन का

(ग) साहसी बनने का (घ) कायरता त्यागने का

(ii) युद्ध की स्थिति में निन्दनीय कार्य है,-

(क) शत्रु की हुंकार को अनसुनी करना (ख) विरोधी का विनाश करना

(ग) दुश्मन को प्रेम से जीतना (घ) कातर बनकर जान बचाना

(iii) कवि की दृष्टि में सब कुछ त्याग अभीष्ट है-,

(क) मित्र के लिए। (ख) दुष्ट के लिए।

(ग) इन्सान के लिए (घ) देश के लिए।

(iv) कौन-सा मुहावरा 'दुखी मत हो' अर्थ का वाचक है-,

(क) गम के आँसू पीना (ख) ले-देकर जीना

(ग) पटक मत माथा (घ) राह रोकते पाहन

(v) 'बहा युगों तक खून-पसीना' का अर्थ है,-

(क) जीवन-पर्यंत परिश्रम करना (ख) युगों तक जीवित रहना

(ग) सतत आपदाओं से टकराना (घ) निरन्तर लक्ष्य की ओर बढ़ना

खण्ड-ख

(व्यावहारिक व्याकरण)

5 **निम्नलिखित वाक्यों के रचना के आधार पर भेद लिखिए -** 3

(क) जब मैं सतीश के पास पहुँचा तब वह पढ़ रहा था।

(ख) लिखने-पढ़ने वाले से व्यर्थ की बातें करना अच्छा नहीं होता।

(ग) कल गाँव से बहुत से लोग आए थे और वे आज ही गाँव लौट गए।

6 **निर्देशानुसार वाच्य-परिवर्तन कीजिए ।** 4

(क) सुरेन्द्र अपने आप नहीं चलता। (भाववाच्य में)

(ख) हरीश से हँसाने पर भी नहीं हँसा जा सका। (कर्तृवाच्य में)

(ग) चिड़ियाँ उड़ नहीं सकीं। (भाववाच्य में)

(घ) संगीता द्वारा एक लंबी कविता सुनाई गई। (कर्तृवाच्य में)

7 **निम्नलिखित वाक्यों में रेखांकित का पद-परिचय लिखिए।** 4

(क) जल्दी जाइए और बाज़ार से कुछ ले आइए।

(ख) आप और सुरेश सदा सच बोलते हैं।

(ग) हम अपने देश पर मर मिटेंगे।

(घ) जो देश के सच्चे भक्त हैं वे देश पर न्योछावर हो जाते हैं।

8 निर्देशानुसार उत्तर दीजिए 4

(क) 'रौद्र' तथा 'शृंगार' रसों के स्थायी भाव लिखिए।

(ख) निम्नांकित काव्य-पंक्तियों में निहित रस बताइए।

(i) करती विकल विलाप, अहिल्या हुई अचेतन।
मानो उसके अरमानों का नत था केतन ।।

(ii) टेढ़े मुखवाले का सीधा मुख करते थे
और उसे सुंदर बनाते, कौन दोष है?
हँसी की फुहारें छूट पड़ीं बाल-वृंद से।

खण्ड-ग

(पाठ्य-पुस्तक)

9 **निम्नलिखित गद्यांश को पढ़िए और नीचे दिए गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए। (2+2+1)** 5

आसमान बादल से घिरा; धूप का नाम नहीं। ठंडी पुरवाई चल रही। ऐसे ही समय आपके कानों में एक स्वर-तरंग झंकार-सी कर उठी। यह क्या है- यह कौन है !यह पूछना न पड़ेगा। बालगोबिन भगत समूचा शरीर कीचड़ में लिथड़े, अपने खेत में रोपनी कर रहे हैं। उनकी अँगुली एक-एक धान के पौधे को, पंक्तिबद्ध, खेत में बिठा रही है। उनका कंठ एक-एक शब्द को संगीत के जीने पर चढ़ाकर कुछ को ऊपर, स्वर्ग की ओर भेज रहा है और कुछ को इस पृथ्वी की मिट्टी पर खड़े लोगों के कानों की ओर !बच्चे खेलते हुए झूम उठते हैं; मेंड पर खड़ी औरतों के होंठ काँप उठते हैं, वे गुनगुनाने लगती हैं; हलवाहों के पैर ताल से उठने लगते हैं; रोपनी करने वालों की अँगुलियाँ एक अजीब क्रम से चलने लगती हैं।बालगोबिन भगत का यह संगीत है या जाद् !

(क) गद्यांश में किस ऋतु का वर्णन है तथा किसान लोग खेतों में क्या-क्या करते हुए वर्णित हुए हैं ?

(ख) धान की रोपाई क्यों और कब होती है ?

		(ग) लोगों के कानों में पड़ने वाली संगीत की ध्वनि किसकी थी और संगीत गाने वाले खेत में क्या कर रहे थे ?	
		निम्नलिखित प्रश्नों के संक्षिप्त उत्तर दीजिए-	
	10(i)	नवाब साहब के खीरे की फाँक को उठाकर होंठों तक ले जाने, सूँघने और रसास्वादन के आनंद में पलकें मूँद लेने के क्रियाकलाप से उनके विषय में नवाब साहब आप क्या सोचते है	2
	(ii)	बालगोबिन भगत की संगीत-लहरी शीतकाल में कहाँ और किस समय तथा ग्रीष्म में किस समय और कहाँ गूँजा करती थी? इस संगीत लहरी में आनन्दमग्न होने वाले प्राय: कौन होते थे?	2
	(iii)	हिंदी भाषा के प्रति फादर काभिल बुल्के के अनुराग को पठित पाठ ''मानवीय करुणा की दिव्य चमक'' के आधार पर लिखिए।	2
	(iv)	कैप्टेन चश्मेवाले के बारे में आप क्या जानते हैं? उसका स्वरूप-चित्रण करते हुए बताइए कि हालदार साहब की उसके प्रति कैसी विचारधारा बन गई थी?	2
	(v)	फादर कामिल बुल्के का देहांत कब हुआ और उन्हें कहाँ दफनाया गया? उनकी अंतिम यात्रा के समय उपस्थित गणमान्य विद्वानों की उपस्थिति किस बात का प्रमाण है?	5
	11	**निम्नलिखित पद्यांश को पढ़कर दिए गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए — (2+2+1)** फ़सल क्या है ? और तो कुछ नहीं है वह नदियों के पानी का जादू है वह हाथों के स्पर्श की महिमा है भूरी-काली-संदली मिट्टी का गुण-धर्म है रूपांतर है सूरज की किरणों का सिमटा हुआ संकोच है हवा की थिरकन का ! (क) फ़सल नदियों के पानी का जादू किस तरह है ? स्पष्ट कीजिए। (ख) फ़सल किसका गुण-धर्म होता है और किस तरह ? (ग) हवा फ़सल पर अपना प्रभाव किस रूप में डालती है ?	
	12(i)	''उसकी स्मृति पाथेय बनी है थके पथिक की पंथा की।'' पंक्ति का भाव स्पष्ट कीजिए तथा बताइए कि इससे कवि के बीते जीवन के कैसे क्षणों का आभास मिलता है ?	2
	(ii)	महाकवि देव ने 'जग-मंदिर-दीपक' किसे कहा है ? उनको अन्य किस प्रकार से संबोधित किया गया है ?	2
	(iii)	गोपियों द्वारा उद्धव को उलाहना क्यों दिया गया ? क्या उद्धव का कोई दोष था जो उन्हें अनेक प्रकार की बातें सुननी पड़ीं ?	2
	(iv)	''अट नहीं रही है'' - कविता के आधार पर ''उड़ने को नभ में तुम पर-पर कर देते हो'' का आशय स्पष्ट कीजिए।	2
	(v)	कवि द्वारा बच्चे और उसकी माँ दोनों को धन्य मानने का क्या कारण है ?''यह दंतुरित मुसकान'' पाठ के आधार पर स्पष्ट कीजिए।	2
	13	भोलानाथ के द्वारा बचपन में अपनी माता जी के अंग न लगकर पिता जी के ही अंग लग जाने का कारण स्पष्ट कीजिए तथा बताइए कि उनके पिता जी ने उन्हें कौन-सा ऐसा अच्छा संस्कार दिया था जा प्रत्येक मानव के लिए सभी तरह उपयोगी है ?	5
		खण्ड-घ **(लेखन)**	
		दिए गए संकेत-बिंदुओं के आधार पर निम्नलिखित में से किसी एक विषय पर 200-250 शब्दों में निबंध लिखिए।	10

	14(i)	**प्रकृति से छेड़खानी** • भूमिका • छेड़खानी के स्वरूप • बढ़ता प्रदूषण • सुरक्षा और संरक्षण के उपाय • उपसंहार	
		अथवा	
	(ii)	**मेरा प्रिय खेल** • प्रस्तावना • प्रिय होने का कारण • प्रिय खेल खेलने की विधि • स्वास्थ्य के लिए लाभप्रद • उपसंहार (अन्य उपयोगिताएँ)	10
		अथवा	
	(iii)	**जन-जीवन और विज्ञान** • प्रस्तावना • मानव की आवश्यकताएँ • उपयोगी उपकरण-विज्ञान की देन • विज्ञान-जन-जीवन की परमावश्यकता • उपसंहार	10
	15	आपके नगर में कुछ दिनों से प्रदूषण-स्तर बढ़ रहा है। उसकी रोकथाम के लिए कुछ उपयोगी सुझाव देते हुए दैनिक जागरण के संपादक महोदय को समाचार-प्रकाशित करने हेतु पत्र लिखिए।	5
	16	**निम्नलिखित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर उसका एक तिहाई शब्दों में सार लिखिए —** हास्य और उल्लास का नाम ही यौवन है। उसे हम कभी युवा नहीं कहेंगे जिसके चेहरे पर हर वक्त बारह बजे रहते हों, मुहर्रमी गम छाया रहता हो। जार्ज बर्नाड शा ने कहा है कि हँसी की पृष्ठभूमि पर ही जवानी के फूल खिलते हैं। ज़िंदगी हास्य और विनोद के बिना अपनी ज़िंदादिली खो देती है। हँसमुख व्यक्ति वह फव्वारा है जिसके शीतल छींटे आसपास के व्यक्तियों के मन को प्रफुल्लित करते रहते हैं। वैयक्तिक जीवन की सफलता के अनेक रहस्यों में एक रहस्य हँसमुख स्वभाव का होना भी है। किसी साक्षात्कार में वह व्यक्ति आसानी से चुन लिया जाता है जिसके होठों पर मुस्कान की दूधिया रेखाएँ अठखेलियाँ करती रहती हैं। पाश्चात्य देशों में बिना मुस्कराहट के अभिवादन अशिष्टता की निशानी मानी जाती है।	5